Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2018 = 6.371, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JAN-FEB, 2019, VOL- 6/49

विद्यार्थी जीवन और बौद्ध धर्म की उपादेयता

रेखा रानी
प्रवक्ता – बी0 एड0 विभाग, किशोरी रमण महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मथुरा

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

''बौद्ध धर्म में मनुष्य के जीवन में विचार की ठोस अभिव्यक्ति देखने को मिलती है, उस काल के संसार में विचारधारा का जीवन के साथ एकता ने एक प्रकार का अद्‌भुत कार्य किया।'' – डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन

भिन्न–भिन्न देश व काल में भिन्न–भिन्न समाजों का प्रादुर्भाव होता रहा है। प्राचीन काल में वैदिक युग के समाज की अपनी सामाजिक मान्यताऐं, आस्थाऐं और धारणायें थी। बुद्ध के पूर्व वैदिक युग में और बुद्ध के समय तक, आर्यों में यज्ञों का प्रचलन बहुतायत में था। उन यज्ञों में पशुओ की वलि दी जाती थी। उस समय शूद्र, दास अन्य अस्पृश्य और सभी वर्णों की स्त्रियों को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार नहीं था। जिसके फलस्वरूप समाज की लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या निरक्षर एवं अँगूठा टेक थी। उस समय शोषण, उत्पीड़न व अन्याय का बोलबाला था। उस युग की समाज व्यवस्था विशुद्ध रूप से वर्ण व्यवस्था व जाति व्यवस्था पर निर्भर करती थी। जिसमें कुछ वर्गों को विशेष सुविधाएं प्राप्त थी और कुछ वर्गों को आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षिक एवं धार्मिक सुविधाओं से वंचित कर दिया गया था। जिस कारण उनका जीवन पशुवत निम्न व हेय समझा जाता था इतनी बड़ी जनसंख्या का जीवन दुःख और अंधकार का पर्याय बन गया।

डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन कहते हैं –''हिंसात्मक और क्रूर यज्ञों ने, जिनके द्वारा परमेश्वर की पूजा की जाती थी, बुद्ध के अन्तः करण पर आघात किया।''

इस समस्या का तथागत बुद्ध ने बड़े ही तार्किक एवं मानवीय दृष्टि से विश्लेषणात्मक अवलोकन किया। उन्होंने सभी के दुःखों का कारण अविद्या, अज्ञान और अशिक्षा पाया। प्रतीत्य–समुत्पाद के अनुशरण से ही अविद्या व अज्ञान का नाश करके दुःखों से निवृति प्राप्त की जा सकती है। बुद्ध ने इस क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन किया। उन्होंने बौद्ध धर्म की प्रवज्जा और दीक्षा प्रदान करने के लिए शूद्रों, सभी वर्ग की स्त्रियों, चाण्डालों और अस्पृश्यों के लिए भी दरवाजे खोल दिए। प्रवज्जा और दीक्षा लेने के बाद सभी प्रकार की शिक्षा ग्रहण कर सकते थे। यद्यपि प्राचीन काल में आज की तरह सार्वभौमिक शिक्षा की व्यवस्था नहीं थी। लेकिन बुद्ध के समकालीन तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय मौजूद थे। उस समय इस विश्वविद्यालय में सम्पन्न व्यक्ति ही शिक्षा प्राप्त करते थे। परन्तु बुद्ध की सामाजिक व्यवस्था में अनेक शूद्रों को

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रवज्जा देकर तक्षशिला व नालन्दा जैसे वि0 वि0 से शिक्षा प्राप्त कराई गई। इसी प्रकार भिक्षुओं व भिक्षुणियों के लिए संघ में शिक्षा प्राप्त करने का पूरा अधिकार था।

बुद्ध का महान मानवतावादी दृष्टिकोण था जिसने महानतम शिक्षा के आयाम की स्थापना की, उन्होंने अपने शिष्यों को– बहुजन–हिताय, बहुजन–सुखाय और लोकानुकम्पा संसार में विचरण करने का आदेश दिया। जिससे सभी मानव जाति को सुशिक्षित कराकर जनकल्याण व लोककल्याण के लिए प्रेरित किया जा सके। तथागत बुद्ध ने अपने परम शिष्य आनन्द को उपदेश देते हुए कहा था – 'अपो दीपो भवः' अपना दीपक स्वंय बनो, अपने आपको स्वंय प्रकाशित करो, ज्ञानवान बनों अपना दुःख तुम्हें स्वंय दूर करना होगा। दूसरा कोई तुम्हारा दुख दूर करने नहीं आयेगा। उस ज्ञान के प्रकाश से अन्धविश्वास के जाल को तोड़कर स्वयं अपना रास्ता खोज सको और स्वयं अपने मालिक बन सको। बुद्ध ने मध्यमार्ग की शिक्षा पर अधिक बल दिया है। यह शिक्षा दोनों अतियों के मध्य का रास्ता है। जिसका पालन विद्यार्थियों के लिए अति आवश्यक है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य सत्य की खोज करना है। तथागत बुद्ध ने जिस सत्य का अन्वेषण किया था वे चार आर्यसत्य निम्नलिखित हैं –

चार आर्य सत्य

1. संसार में दुःख अकाट्य सत्य है।
2. इस दुःख का कारण है।
3. दुःख निरोधगामी है।
4. दुःख विनाश के मार्ग है।

1. दुःख सत्य की व्याख्या करते हुए बुद्ध ने कहा – जन्म भी दुःख है, बुढ़ापा भी दुःख है, मरण शोकः, रुदन, मन की खिन्नता–हैरानगी भी दुःख है। अप्रिय से संयोग, प्रिय से वियोग भी दुःख है। इच्छा करके उसे प्राप्त न करना भी दुख है। पाँच उपादान–स्कन्ध दुख की श्रेणी में आते है –

   उपादान–स्कन्दः – रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार, विज्ञान।

   1. रूप :– चारों महाभूत पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि यह रूप स्कन्द कहे जाते हैं।
   2. वेदना :– हम वस्तुओं या उनके विचार के सम्पर्क में आकर जो सुख–दुःख या न सुख–न दुख के रूप में अनुभव करते हैं उसे वेदना स्कन्द कहते हैं।
   3. संज्ञाः– वेदना के बारे में हमारे मस्तिष्क पर पहले से ही अंकित संस्कारों द्वारा जो हम पहचानते है, यह संज्ञा स्कन्द कहलाते हैं।
   4. संस्कारः– रूपों की वेदनाओं और संज्ञाओं का जो संस्कार मस्तिष्क पर पड़ा रहता है और जिसकी सहायता से हम पहिचानते हैं।
   5. विज्ञानः– चेतना या मन को विज्ञान कहते हैं।

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

2. दुःख का कारण हैः– दुःख का कारण क्या है? दुःख का कारण तृष्णा है यह कई प्रकार की होती है। तृष्णा, काम (भोग) की तृष्णा, भव की तृष्णा, विभव की तृष्णा, इन्द्रियों के जितने प्रिय विषय या काम हैं उन विषयों के साथ सम्पर्क, उनका ख्याल तृष्णा को पैदा करता है। यही तृष्णा दुःख का कारण बन जाती है।
3. दुः,ख विनाशः– तृष्णा के परित्याग, विनाश को दुख निरोध कहते है। प्रिय विषयों–अपनों से लगाव, मोह माया, विचारों–विकल्पों से जब तृष्णा के नाश होने पर उपादान (विषयों का संग्रह करना) का निरोध करना होता है, उपादान के निरोध से जन्म (पुनर्जन्म) का निरोध होता है, जन्म के निरोध से जरामरण (बुढ़ापा, मरण शोक, रोना, दुख, मन की खिन्नता, हैरानगी) नष्ट हो जाता है इस प्रकार दुखों का विनाश होता है। यही दुख निरोध बुद्धि के सारे दर्शन का केन्द्र बिन्दु है। सभी आहारों का निदान (कारण) है तृष्णा, इसका कारण वेदना, इसका कारण स्पर्श, इसका कारण आयतन, इसका कारण नाम और रूप, इसका कारण विज्ञान, इसका कारण संस्कार इसका कारण अविद्या।

   अविद्या फिर अपने चक्र को बारह अंगों में दुहराती है, इसे ही द्वादशांग प्रतीत्य–समुत्पाद कहते हैं–
4. दुःख विनाश का मार्गः– तथागत बुद्ध ने दुख को दूर करने के लिए आर्य आष्टांगिक मार्ग को बताया जिन पर चलकर व्यक्ति इस सांसारिक उलझनों से दूर रह सकता है। उन्होंने आष्टांगिक मार्ग की आठ बातों को ज्ञान (प्रज्ञा), सदाचार (शील) और योग (समाधि) तीन भागों में विभक्त किया है–

   ज्ञान
   1. सम्यक दृष्टि
   2. सम्यक संकल्प

   शील
   3. सम्यक वाणी
   4. सम्यक कर्म
   5. सम्यक जीविका

   समाधि
   6. सम्यक प्रयत्न
   7. सम्यक स्मृति
   8. सम्यक समाधि

बुद्ध ने दुःख का कारण अविद्या व तृष्णा बताया है जिसको दूर करने के लिए आठ मार्गों का निर्माण किया है जिनपर चलकर दुःख को दूर किया जा सकता है।

तथागत बुद्ध ने संघ का गठन शिक्षण संस्थान के रूप में किया। जनसाधारण को भी अपने उपदेशों से अवगत कराया।

- <u>शिक्षण/संस्थाओं का गठन</u>

  (अ) उपासक/उपासिका संघ

  (ब) अनागरिक/अनागरिका संघ

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

(स) श्रामणेर/श्रामणेरी संघ

(द) भिक्षु/भिक्षुणी संघ

इन संघों के अन्तर्गत साधारण शिक्षा, उच्च शिक्षा, उच्चतर शिक्षा की व्यवस्था लागू की गई थी।

- (अ) उपासक/उपासिका संघः– उपासक–उपासिका शिक्षण संघ में विद्यार्थियों के लिए तथागत बुद्ध ने गृहस्थ जीवन से सम्बन्धित शिक्षा पर बल दिया है। गृहस्थ जीवन की शिक्षा हेतु बौद्ध भिक्षु उनके घर जाकर उन्हें शिक्षा प्रदान करते थे। उन्होंने यह व्यवस्था किसी जाति, धर्म, वर्ग व विशेष समाज के लिए नहीं थी अपितु सभी वर्ग समाज के लिए थी। शिक्षा सभी के लिए सार्वजनिक थी। उपासक विद्यार्थी अपने परिवार के साथ रहकर त्रिशरण और पंचशील का पालन करते थे। विद्यार्थियों के लिए शील पर अधिक बल देते हुए कहा जाता है – शील पालन के अभाव में छात्र उत्तम विद्यार्थी नहीं बन सकता। शील ज्ञानवान बनने की चाबी है। वह शील पाँच प्रकार के हैं जो निम्नलिखित है –

पंचशील :– 1. प्राणी मात्र की हत्या से विरत

2. चोरी से विरत
3. झूठ बोलने से विरत
4. अब्रह्माचर्य (व्यभिचार से विरत)
5. सुरा, मेरेय, भांग आदि मादक द्रव्यों से विरत

- (ब) अनागरिक/अनागरिका संघ :– यह दूसरी श्रेणी के विद्यार्थी है। जो गृह त्यागी होते है और उच्च शिक्षा गृहण करने के लिए घर से दूर गुरुकुल या विश्वविद्यालयों में रहकर शिक्षा प्राप्त करते है। जो सफेद वस्त्र पहनते है लम्बा कुर्ता, नीचे अंचला व सफेद रंग की चादर का उपयोग करते है। यह नगर–नगर, गाँव–गाँव जाकर बुद्ध धर्म की शिक्षा व उसका प्रचार प्रसार करते हैं।
- (स) श्रामणेर/श्रामणेरी संघ :– यह तीसरी श्रेणी के विद्यालय है। जहाँ उच्चतर शिक्षा दी जाती है। यह चीवर धारण करते है। संघाटी नहीं पहनते। यह पंचशील का पालन करते है।
- (द) भिक्षु/भिक्षुणी संघ :– यह चतुर्थ श्रेणी के विद्यालय या संघ कहे जाते है। यहाँ पर विद्यार्थी श्रामणेर का प्रशिक्षण लेकर भिक्षुचर्या में प्रवेश करते हैं। उन्हें उपसम्पदा की शिक्षा दी जाती है। उपसम्पदा देने का अपना एक विधि–विधान है। भिक्षु अपने आचार, विचार, शील, ध्यान, भावना से अपनी चित्तमलों को दूर कर अरहंत को प्राप्त होते हैं।

शिक्षक – छात्र सम्बन्ध :– शिक्षक व विद्यार्थी के बीच मधुर सम्बन्धों पर बल दिया है। गुरु व शिष्य के बीच पितृवत और पुत्रवत सम्बन्धों की आवश्यकता है। ताकि अच्छे – बुरे समय में एक–दूसरे के काम आ सकें। उपाध्याय/आचार्य के प्रति आदर भाव, श्रद्धा भाव, लज्जा शील, गौरवशाली कार्य करना और ध्यान द्वारा मन को निर्मल रखने पर विशेष बल दिया है। जो विद्यार्थी के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पाठ्य – वस्तु :– तथागत बुद्ध ने दो प्रकार के पाठ्य विषयों का निर्धारण किया था –

1. धार्मिक विषय 2. लौकिक विषय।

1. धार्मिक विषय के अन्तर्गत पाठ धर्म के तीन वर्ग थे –
   (अ) सूत्र पिटक (जिसके आचार्य को 'सूत्रान्तिक' आचार्य कहा जाता था)
   (ब) विनयपिटक (जिसके आचार्य को 'विनयधर' कहा जाता था)
   (स) अभिधम्मपिटक (इन विद्वानों को व्याख्यता कहा जाता था)
2. लौकिक विषयः– इसके अन्तर्गत जीवन उपयोगी विषय सम्मिलित थे। शिल्प शिक्षा (टैक्नीकल एजुकेशन) पर अधिक बल दिया गया।
3. परीक्षा प्रणाली :– शिक्षा व परीक्षा का गहरा सम्बन्ध है। उस समय व्यवहारिक परीक्षा पर अधिक बल दिया गया था। परीक्षा ऐसी हो जो गुरु व शिष्य के बीच कर्त्तव्य बोध कराये।

विद्यार्थी ज्ञान प्राप्त करने के लिए पाँच बातों को अपनायें शांत रहना, सुनना, याद रखना, अमल में लाना, दूसरों को सिखाना। यदि इन बातों को जीवन में प्रवेश करायें तो निश्चित ही एक आध्यात्मिक जीवन को जिया जा सकता है। ज्ञान, बुद्धि और विवके से केवल मानव शरीर ही इस प्रकार से जीवन धर्म के साधनों से युक्त है, जिसका अभ्यास करके दुर्लभ बोधि चित्त प्राप्त कर सकते हैं। क्योंकि ध्यान इंसान को पूर्ण बनाता है, चिन्तन–मनन, दक्षता और विमर्श से उसकी दृष्टि साफ होती है।

तथागत बुद्ध द्वारा आज से 2553 वर्षों से चलाई जा रही शिक्षा पद्यति देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी व्यवहारत है। बुद्ध कहीं शिक्षक नहीं थे लेकिन उनके लिए सारी दुनिया विद्यालय और सम्पूर्ण समाज विद्यार्थीगण थे। उन्होंने संयम पर जोर देते हुए ज्ञान प्राप्त करना, बुद्धिमान और प्रज्ञावान बनना विद्यार्थी बुद्धिमान और अनुशासित होकर एकान्तवास नहीं करता। उसे अपने साथियों की आवश्यकता होती है साथी भी वह जो उनके विचारों से मेल खाते हों। आज वर्तमान समय में विद्यालयों में छात्र यूनियन है बौद्ध शिक्षा का प्रारम्भ इसी प्रकार होता है। आज भी यह सिस्टम लागू है। भारत की सार्वजनिक शिक्षा व जीवन उपयोगी शिक्षा के सूत्रधार थे तथागत बुद्ध

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

बौद्ध संस्कृति – महापंडित राहुल सांकृत्यायन
समकालीन बुद्ध–धर्म के सामाजिक आयाम – डॉ0 संघमित्रा चौधरी
डिप्रेस्ड एक्सप्रेस नवम्बर 2017
डिप्रेस्ड एक्सप्रेस मई 2019
बुद्ध और उनका धर्म – डॉ0 अम्बेडकर

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies